❋ 14 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] जब तक देह-अभिमान है तब तक भक्त हो। तुम ज्ञानी बनने के लिए पढ़ रहे हो। जब इम्तहान पास करेंगे, कर्मातीत बन जायेंगे तब सम्पूर्ण ज्ञान कहेंगे। फिर पढ़ने की दरकार नहीं।

2] वास्तव में भगवान भी होना एक चाहिए। यहाँ तो अनेक भगवान हो गये हैं। अपने को भगवान कहते रहते हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। भक्ति में घोर अन्धियारा है। वह है ही भक्ति मार्ग।

3] भक्त लोग गाते हैं ज्ञान अंजन सतगुरू दिया, अज्ञान अंधेर विनाश। ज्ञान अंजन गुरू लोग नहीं दे सकते। गुरू तो ढेर हैं। तुम बच्चे जानते हो भक्ति में क्या-क्या करते थे, किसको याद करते थे, किसको पूजते थे। वह भक्ति का अन्धियारा अभी छूट गया क्योंकि बाप को जान लिया।

4] बाप ने परिचय दिया है– मीठे-मीठे बच्चे, तुम आत्मा हो। तुमने इस शरीर के साथ पार्ट बजाया है। तुम्हारा है बेहद का ज्ञान। बेहद का पार्ट बजाते रहते हो।

5] अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ता है। आत्मा छोटी स्टार मिसल है, इतना समझते हैं फिर भी इतना बड़ा लिंग बना देते हैं। वह भी क्या करें क्योंकि छोटी-सी बिन्दु की पूजा तो कर न सकें। कहते हैं भ्रकुटी के बीच चमकता है सितारा। अब उस सितारे की भक्ति कैसे करें? भगवान का तो किसको पता नहीं हैं। आत्मा का मालूम है। आत्मा भ्रकुटी के बीच रहती है। बस। यह बुद्धि में नही आता कि आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है। पहले-पहले तुम ही पूजा करते थे। बड़े-बड़े लिंग बनाते हैं।

6] बाप जानने से ही तृप्ति हो जाती है क्योंकि बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो हम बेहद बाप के बच्चे हैं, बाप को तो सब याद करते हैं ना। भल कोई-कोई कहते हैं– यह तो नेचर है, हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। बाप ने बताया है कि ब्रह्म में कोई भी लीन नहीं होता। यह तो अनादि ड्रामा है जो फिरता रहता है, इसमें मुंझने की बिल्कुल दरकार नहीं। 4 युगों का चक्र फिरता रहता है। हूबहू रिपीट होता रहेगा। बाप एक ही है, दुनिया भी एक ही है।

7] वो लोग कितना माथा मारते हैं। समझते हैं मून में भी दुनिया है,सितारों में भी दुनिया है। कितना ढूंढते हैं। मून में भी प्लॉट लेने का सोचते हैं– यह कैसे हो सकता। किसको पैसा देंगे? इसको कहा जाता है साइंस का घमण्ड। बाकी तो है कुछ भी नहीं। ट्रायल करते रहते हैं। यह माया का पाम्प है ना।

8] स्वर्ग में तो अथाह धन था। एक मन्दिर से ही देखो कितना धन ले गये। भारत में ही इतना धन था, बहुत खजाना भरपूर था। मुहम्मद गजनवी आया, लूटकर ले गया। आधाकल्प तो तुम समर्थ रहते हो, चोरी आदि का कोई नाम नहीं होता। रावण राज्य ही नहीं। रावण्य राज्य शुरू हुआ और चोरी चकारी, झगड़े आदि शुरू हुए हैं। रावण का नाम लेते हैं। बाकी रावण कोई है नहीं। विकारी की प्रवेशता हुई।

9] गाते भी हैं बेहद का बाबा आप जब आयेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। आपकी मत पर ही चलेंगे। भक्ति में तो बाप का मालूम ही नहीं रहता है, यह पार्ट अभी ही चलता है। अभी ही बाप पढ़ाते हैं। तुम जानते हो यह पढ़ाई का पार्ट फिर 5 हजार वर्ष बाद चलेगा। बाप फिर 5 हजार वर्ष बाद आयेंगे।

10] बापदादा ने हर बच्चे को दिव्य बुद्धि का वरदान दिया है। दिव्य बुद्धि द्वारा ही बाप को, अपने आपको और तीनों कालों को स्पष्ट जान सकते हो। सर्वशक्तियों को धारण कर सकते हो। दिव्य बुद्धि वाली आत्मा कोई भी संकल्प को कर्म वा वाणी में लाने के पहले हर बोल वा कर्म के तीनों काल जानकर प्रैक्टिकल में आती है। उनके आगे पास्ट और फ्युचर भी इतना स्पष्ट होता है जितना प्रेजन्ट स्पष्ट है। ऐसे दिव्य बुद्धि वाले त्रिकालदर्शी होने के कारण सदा सफलता सम्पन्न बन जाते हैं।

✺ 14 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ योग-

1] तुम भल अपने घर में रहो, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।

✺ धारणा-

1] बाबा कहते हैं, शरीर निर्वाह अर्थ कुछ भी करो, उसके लिए मना नहीं करते। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। बाप और वर्सा याद रहे। बाप तो सारे विश्व का मालिक तुमको बना देते हैं।

2] ऐसा तृप्त और विशालबुद्धि बनना है जो किसी में भी आंख न डूबे। दिल में कोई भी आश न रहे क्योंकि यह सब विनाश होना है।

3] सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करने वाले ही परमानन्द का अनुभव कर सकते हैं।

✺ सेवा-

1] ज्ञान इन्जेक्शन किसको लगता है, यह तो समझ सकते हैं। फलाने को ज्ञान का इन्जेक्शन अच्छा लगा है, फलाने को कम लगा हुआ है, इनको बिल्कुल लगा हुआ ही नहीं है। यह तो बाबा ही जानते हैं ना। **सर्विस पर सारा मदार है।** सर्विस से ही बाप बतायेंगे इनको इन्जेक्शन लगा नहीं, बिल्कुल सर्विस करना जानते ही नहीं। ऐसे भी हैं किसको जास्ती इन्जेक्शन लगा है, किसको बिल्कुल नहीं !